वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 309 | शनिवार 11 अप्रैल 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम 2026) कर्टेन रेजर कार्यक्रम: ग्राम से किसान, वैज्ञानिक, निवेशक और नीति निर्माता को मिलेगा एक मंच

सरकार कृषि का सुदृढ़ इकोसिस्टम विकसित करने के लिए कृतसंकल्पित: भजनलाल

किसानों को मिलेगी नवीनतम आधुनिक तकनीकों की जानकारी

किसान कल्याण एवं सशक्तीकरण के लिए होगा संवाद

किसान कल्याण से जुड़ी योजनाओं का किया जाएगा प्रचार-प्रसार

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को राज्य ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक (ग्राम 2026) मीट के कर्टेन रेजर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि ग्राम-2026 एक ऐसा मंच होगा जहां किसान, वैज्ञानिक, निवेशक और नीति निर्माता मिलकर किसानों के सशक्तीकरण के लिए संवाद करेंगे। इस मीट के माध्यम से कृषि और उससे जुड़े सेक्टर्स पर एकेडेमिक-संस्थागत एवं विशेषज्ञों के अनुभव का लाभ प्रदेश के किसानों को मिल पाएगा। उन्होंने कहा कि हाल ही में केन्द्र सरकार द्वारा जयपुर में पश्चिमी क्षेत्रीय जोनल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया था, जिसके माध्यम से कृषि उत्पादन, जल प्रबंधन, फसल सुरक्षा और प्राकृतिक खेती जैसे विषयों पर गहन चर्चा की गई थी।

वैज्ञानिक तरीके से खेती करें किसान, रासायनिक उर्वरकों का हो सीमित उपयोग

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा राज्य बाजरा, सरसों, तिलहन, जौ तथा ग्वार में प्रथम, मूंग तथा मूंगफली के उत्पादन में द्वितीय तथा सोयाबीन के उत्पादन में तृतीय स्थान पर है। उन्होंने कहा कि किसानों को वैज्ञानिक तरीकें से खेती करते हुए रासायनिक उर्वरकों का सीमित उपयोग करना चाहिए तथा मृदा परीक्षण के आधार पर खेती अपनानी चाहिए, ताकि भूमि की उर्वरता भविष्य के लिए सुरक्षित रह सके। साथ ही, उन्होंने जल संरक्षण के लिए फव्वारा (स्प्रिंकलर) जैसी आधुनिक सिंचाई तकनीकों को अपनाने पर भी जोर दिया। शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार किसानों के सशक्तीकरण के लिए निरन्तर निर्णय ले रही है। अब तक राज्यभर में 4 लाख 80 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में सूक्ष्म सिंचाई संयंत्र स्थापित करवाए जा चुके हैं। साथ ही, नहरी जल के संग्रहण के लिए कुल 12 हजार 476 डिग्गियों का निर्माण तथा कुल 32 हजार 918 किलोमीटर सिंचाई पाइप लाइन लगाई जा चुकी है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार द्वारा मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के माध्यम से 12 लाख से अधिक पशुओं की निःशुल्क बीमा पॉलिसी जारी की गई है। 1962 मोबाइल वेटरिनरी सेवाएं तथा 536 मोबाइल वाहनों द्वारा करीब 60 लाख पशुओं का उपचार कर 15 लाख से अधिक पशुपालकों को लाभान्वित किया गया है। साथ ही, मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना के तहत हमारी सरकार द्वारा दुग्ध उत्पादकों के आर्थिक स्तर में वृद्धि करने के उद्देश्य से 5 रुपये प्रति लीटर प्रत्यक्ष आर्थिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने अपने कार्यकाल के पहले वर्ष में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट का आयोजन किया, जिसके तहत राज्य के कृषि क्षेत्र में निवेश के लिए लगभग 43 हजार करोड़ रुपए से अधिक के 2 हजार 539 एमओयू हुए। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा संचालित प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसानों को 6000 रुपये की राशि दी जा रही है।

किसान समृद्ध एवं खुशहाल बनें: किरोड़ी लाल

इस दौरान कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि हमारी सरकार की प्राथमिकता है कि किसान पारम्परिक खेती से हटकर आधुनिक खेती की ओर आगे बढ़े तथा खेती में नई-नई तकनीकों का उपयोग कर समृद्ध एवं खुशहाल बने। ग्राम 2026 के माध्यम से किसानों को विश्वभर से आए कृषि विशेषज्ञों से नवीनतम तकनीकों की जानकारी मिलेगी। साथ ही वे वैश्विक मंच से भी जुड़ पाएंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की अगुवाई में हमारी सरकार किसानों को आगे बढ़ाने एवं उनके सम्मान के लिए निरन्तर कार्य कर रही है। इस दौरान शर्मा ग्राम के लोगो का अनावरण एवं ब्रोशर का विमोचन किया। इस अवसर पर पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत, सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास सहित विभिन्न अधिकारीगण एवं बड़ी संख्या में किसान मौजूद थे।

॥श्री मुनिसुव्रतनाथाय नमः॥

श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ नवग्रह अरिष्ट निवारक दिगम्बर जैन मन्दिर वाटिका, जयपुर

भगवान मुनिसुव्रतनाथ भगवान का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव

रविवार, दिनांक 12 अप्रैल, 2026

प्रातः 8.15 बजे

पंचामृत अभिषेक एवं पवित्र मंत्र उच्चारण कें साथ

1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक

नवग्रहों की शांति एवं समस्त अरिष्टों के निवारण हेतु विशेष पूजन एवं शांतिधारा होगी।

निवेदन है ... सभी सपरिवार सादर आमंत्रित है।

98290-14688 / 94140-48432 / 94140-47344 / 98295-94488

: आयोजक :

प्रबन्धसमिति, श्री दिगम्बर जैन मन्दिर वाटिका, जयपुर

आस्था का बाजारीकरण: वीआईपी दर्शन और आम श्रद्धालु की उपेक्षा पर एक गंभीर सवाल

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत जैसे देश में, जहां धर्म और आस्था केवल व्यक्तिगत विश्वास का विषय नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, वहाँ मंदिरों और तीर्थ स्थलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ये स्थान सदियों से समानता, शांति, और आध्यात्मिक संतुलन के प्रतीक माने जाते रहे हैं।

''भगवान के दरबार में सब बराबर हैं'' यह वाक्य केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि भारतीय समाज की गहरी मान्यता रहा है। लेकिन बीते कुछ वर्षों में इस मान्यता पर प्रश्नचिह्न लगते दिखाई दे रहे हैं। देश के कई प्रमुख मंदिरों और तीर्थ स्थलों पर वीआईपी दर्शन, विशेष पूजन-अभिषेक और आरती के नाम पर भारी शुल्क वसूले जा रहे हैं। इन सेवाओं के बदले श्रद्धालुओं को लंबी कतारों से मुक्ति, कम समय में दर्शन, और अधिक सुविधाजनक अनुभव दिया जाता है। पहली नजर में यह व्यवस्था एक विकल्प के रूप में दिखाई देती है, लेकिन जब इसका असर आम श्रद्धालुओं के अनुभव पर पड़ता है, तब यह एक गंभीर सामाजिक समस्या बन जाती है। आज स्थिति यह है कि एक ओर वे लोग हैं जो अतिरिक्त पैसे देकर कुछ ही मिनटों में आराम से दर्शन कर लेते हैं, वहीं दूसरी ओर बड़ी संख्या में आम लोग घंटों, कभी-कभी पूरे दिन, कतारों में खड़े रहते हैं। इस दौरान उन्हें भीड़, धक्का-मुक्की, बदतमीजी और कई बार मारपीट जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है। यह अनुभव केवल असुविधाजनक नहीं, बल्कि अपमानजनक भी होता है—विशेषकर तब जब व्यक्ति अपनी आस्था और श्रद्धा के साथ वहां पहुंचा हो। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या आस्था भी अब एक ''प्रीमियम सेवा'' बनती जा रही है? क्या भगवान के दर्शन के लिए भी आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव होना चाहिए? यह स्थिति केवल धार्मिक स्थलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज में बढ़ती असमानता का प्रतिबिंब भी है। राशन की दुकानों से लेकर गैस सिलेंडर की लाइन तक, और अब मंदिरों तक मिडल क्लास और आम आदमी के हिस्से में अक्सर अव्यवस्था और संघर्ष ही आता है। वीआईपी संस्कृति के पक्ष में तर्क दिया जाता है कि इससे मंदिरों को अतिरिक्त राजस्व मिलता है, जिससे उनकी व्यवस्था और सुविधाओं को बेहतर बनाया जा सकता है। यह तर्क कुछ हद तक सही भी है। बड़े मंदिरों में रोजाना लाखों श्रद्धालु आते हैं, जिनकी व्यवस्था करना आसान नहीं होता। ऐसे में यदि कुछ लोग अतिरिक्त शुल्क देकर अलग व्यवस्था चाहते हैं, तो उससे प्राप्त धन का उपयोग सार्वजनिक सुविधाओं में किया जा सकता है लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है जब यह व्यवस्था असंतुलित हो जाती है। जब वीआईपी सुविधाएं इतनी अधिक हो जाती हैं कि आम श्रद्धालुओं के लिए उपलब्ध संसाधन और समय कम पड़ने लगते हैं, तब यह एक प्रकार का अन्याय बन जाता है। कई बार देखा गया है कि वीआईपी दर्शन के लिए सामान्य कतारों को रोका जाता है, जिससे आम लोगों का इंतजार और बढ़ जाता है। इससे असंतोष और आक्रोश पैदा होना स्वाभाविक है। इसके अलावा, मंदिरों में कार्यरत कर्मचारियों और सुरक्षा कर्मियों का व्यवहार भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। कई मामलों में आम श्रद्धालुओं के साथ कठोर और अपमानजनक व्यवहार किया जाता है, जबकि वीआईपी लोगों के साथ अत्यधिक विनम्रता दिखाई जाती है। यह दोहरा व्यवहार समाज में पहले से मौजूद वर्ग विभाजन को और गहरा करता है। धार्मिक स्थलों की मूल भावना पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं होते, बल्कि वे मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन के केंद्र होते हैं। जब वहां पहुंचने वाला व्यक्ति अव्यवस्था, भीड़ और भेदभाव का सामना करता है, तो उसकी आध्यात्मिक अनुभूति प्रभावित होती है। यह अनुभव उसे निराश और हताश कर सकता है। इस समस्या का समाधान आसान नहीं है, लेकिन असंभव भी नहीं। सबसे पहले, मंदिर प्रशासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वीआईपी सेवाओं की संख्या और प्रभाव सीमित रहे। इन सेवाओं का उद्देश्य केवल अतिरिक्त सुविधा प्रदान करना होना चाहिए, न कि आम श्रद्धालुओं के अधिकारों को कम करना। दूसरा, भीड़ प्रबंधन के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। ऑनलाइन बुकिंग, टाइम स्लॉट सिस्टम, और डिजिटल कतार प्रबंधन जैसे उपायों से भीड़ को बेहतर तरीके से नियंत्रित किया जा सकता है। इससे सभी श्रद्धालुओं को एक व्यवस्थित और सम्मानजनक अनुभव मिल सकता है। तीसरा, कर्मचारियों और सुरक्षा कर्मियों को संवेदनशीलता और शिष्टाचार का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। हर श्रद्धालु, चाहे वह वीआईपी हो या आम व्यक्ति, सम्मान का पात्र है। यह भावना केवल नीतियों में नहीं, बल्कि व्यवहार में भी दिखाई देनी चाहिए। चौथा, सरकार और संबंधित ट्रस्टों को इस मुद्दे पर स्पष्ट दिशा-निर्देश बनाने चाहिए। धार्मिक स्थलों पर समानता और पारदर्शिता सुनिश्चित करना केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी भी है। अंततः, यह भी जरूरी है कि समाज स्वयं इस मुद्दे पर जागरूक हो। जब तक लोग इस असमानता को सामान्य मानते रहेंगे, तब तक इसमें बदलाव आना कठिन है। आस्था का अर्थ केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि समानता, करुणा और न्याय जैसे मूल्यों को अपनाना भी है। आज समय आ गया है कि हम यह सोचें कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। क्या हम ऐसे समाज की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ भगवान के दर्शन भी पैसे और पहुँच के आधार पर तय होंगे? या हम उस मूल भावना को बचाए रखेंगे, जिसमें हर व्यक्ति को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त हो? मंदिरों की पवित्रता केवल उनकी भव्यता या व्यवस्था से नहीं, बल्कि वहां मिलने वाले अनुभव से तय होती है। यदि वह अनुभव भेदभाव और असमानता से भरा होगा, तो आस्था की नींव कमजोर पड़ जाएगी। इसलिए यह जरूरी है कि हम इस मुद्दे को गंभीरता से लें और मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाएं, जहाँ हर श्रद्धालु को यह महसूस हो कि वह वास्तव में भगवान के दरबार में है—जहाँ सब बराबर हैं।

राजनीति

उपचार में मदद करती होम्योपैथी

होम्योपैथी एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति है, जो अत्यधिक पतली की गई औषधियों के उपयोग पर आधारित है। यह पद्धति इस विचार पर टिकी है कि शरीर में स्वयं को ठीक करने की क्षमता होती है और सही तरीके से दी गई दवा उस क्षमता को सक्रिय कर सकती है। हालांकि, इसके प्रभाव को लेकर चिकित्सा जगत में लंबे समय से बहस जारी है। होम्योपैथी की शुरूआत 18वीं शताब्दी के अंत में जर्मन चिकित्सक सैमुअल हैनीमैन ने की थी। उनका सिद्धांत था कि जो पदार्थ किसी बीमारी के लक्षण पैदा करता है, वही अत्यधिक पतली मात्रा में उन लक्षणों को ठीक भी कर सकता है। इस सिद्धांत के साथ 'सक्सेशन' प्रक्रिया जुड़ी है, जिसमें दवा को बार-बार पतला और झटका दिया जाता है। होम्योपैथिक विशेषज्ञों का मानना है कि जितनी अधिक दवा पतली की जाती है, उसकी प्रभावशीलता उतनी ही बढ़ती है।होम्योपैथी में उपचार से पहले मरीज की विस्तृत जानकारी ली जाती है। इसमें उसकी शारीरिक स्थिति, मानसिक अवस्था, जीवनशैली और खान-पान की आदतें शामिल होती हैं। इसके आधार पर दवा दी जाती है, जो आमतौर पर गोली, तरल या टिंचर के रूप में होती है। इसके बाद समय-समय पर जांच कर उपचार के प्रभाव का आकलन किया जाता है। इस पद्धति का उपयोग कई प्रकार की बीमारियों में किया जाता है। इनमें अस्थमा, एलर्जी, त्वचा रोग, उच्च रक्तचाप, जोड़ों का दर्द और मानसिक समस्याएं जैसे तनाव, चिंता और अवसाद शामिल हैं। कई लोग दावा करते हैं कि इससे उन्हें राहत मिलती है, जबकि कुछ विशेषज्ञ इसके प्रभाव को केवल मानसिक विश्वास यानी प्लेसीबो प्रभाव मानते हैं। प्लेसीबो प्रभाव वह स्थिति है, जिसमें मरीज को बिना सक्रिय दवा के भी सुधार महसूस होता है, क्योंकि उसे विश्वास होता है कि वह उपचार ले रहा है। होम्योपैथी में लंबी परामर्श प्रक्रिया और व्यक्तिगत ध्यान भी इस प्रभाव को बढ़ा सकते हैं। यही कारण है कि कुछ मरीजों को वास्तविक लाभ का अनुभव होता है। हालांकि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से होम्योपैथी की प्रभावशीलता पर ठोस प्रमाण सीमित हैं। कई शोध और समीक्षाओं में यह पाया गया है कि होम्योपैथिक दवाओं में सक्रिय तत्व अत्यंत कम या लगभग शून्य होते हैं।

संपादकीय

वैश्विक राजनीति में बदलते समीकरण और भारत की चुनौती

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के वर्तमान दौर में वैश्विक शक्तियों के बीच तनाव और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा तेज होती जा रही है। विशेष रूप से अमेरिका, ईरान और दक्षिण एशिया के संदर्भ में हाल की घटनाएं एक जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य को सामने लाती हैं। इस परिदृश्य में भारत का बढ़ता प्रभाव भी प्रमुख भूमिका निभा रहा है। हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बयानों ने वैश्विक स्तर पर चिंता पैदा की। उन्होंने ईरान की प्राचीन

सभ्यता के समाप्त होने तक की बात कही, जिससे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में हलचल मच गई। इतिहास गवाह है कि परमाणु शक्ति का प्रयोग सबसे पहले अमेरिका ने ही किया था, इसलिए ऐसे बयानों को लेकर आशंका स्वाभाविक है। हालांकि बाद में उन्होंने अपने रुख में नरमी दिखाते हुए ईरान को विचार के लिए समय देने की बात कही। इस घटनाक्रम में पाकिस्तान की भूमिका भी चर्चा में रही। पाकिस्तान के सैन्य और राजनीतिक नेतृत्व द्वारा हस्तक्षेप की अपील का उल्लेख कर अमेरिका ने यह संकेत देने की कोशिश की कि वह दक्षिण एशिया में नए समीकरण स्थापित करना चाहता है। इससे यह धारणा बनती है कि अमेरिका भारत के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए पाकिस्तान को फिर से महत्व देने की रणनीति अपना रहा है। भारत ने हाल के वर्षों में वैश्विक मंच पर अपनी स्वतंत्र और दृढ़ नीति का परिचय दिया है। चाहे आर्थिक नीतियों का सवाल हो या कूटनीतिक निर्णय, भारत ने कई बार दबाव के बावजूद अपने हितों से समझौता नहीं किया। यही कारण है कि भारत को अब पारंपरिक तरीके से प्रभावित करना आसान नहीं रह गया है। विशेषज्ञ मानते हैं कि अमेरिका की रणनीति अब प्रत्यक्ष टकराव के बजाय अप्रत्यक्ष संतुलन बनाने की ओर बढ़ रही है। ईरान जैसे देशों के साथ उसका आक्रामक रवैया और भारत के प्रति संयमित दृष्टिकोण इसी का संकेत देता है। भारत के मामले में वह सीधे हस्तक्षेप करने से बचता है, लेकिन क्षेत्रीय राजनीति के माध्यम से प्रभाव डालने का प्रयास करता है। इसके साथ ही, सभ्यतागत दृष्टिकोण से भी यह संघर्ष महत्वपूर्ण है। भारत और ईरान जैसे देशों में अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति बढ़ता झुकाव पश्चिमी मॉडल के लिए चुनौती बन रहा है। यह केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि वैचारिक प्रतिस्पर्धा भी है। हालांकि, पाकिस्तान की आंतरिक स्थिति आर्थिक संकट, आतंकवाद के आरोप और मानवाधिकार संबंधी चिंताएं उसे स्थायी रूप से मजबूत साझेदार बनने से रोकती हैं। इसलिए उसे वैश्विक स्तर पर विश्वसनीयता दिलाने की कोशिशें सीमित प्रभाव ही डाल सकती हैं। भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक एकजुटता बनाए रखना है। इतिहास बताता है कि देश बाहरी दबावों का सामना एकजुट होकर कर लेते हैं, लेकिन आंतरिक विभाजन उन्हें कमजोर कर देता है। इसलिए राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। आने वाला दशक भारत के लिए निर्णायक साबित हो सकता है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

निर्णायक कालखंड

किशन सनमुखदास भावनानी

आज वैश्विक स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा और प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत एक मजबूत और प्रभावशाली देश के रूप में उभर रहा है। हम विकसित भारत, विजन 2047 और बहु-खरब डॉलर अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन इसके समानांतर भ्रष्टाचार की बढ़ती घटनाएं हमारे इन लक्ष्यों के सामने गंभीर चुनौती बनकर खड़ी हैं। हाल के दिनों में विभिन्न राज्यों से सामने आए भ्रष्टाचार के मामलों ने चिंता बढ़ा दी है। चाहे वह पोषण घोटाला हो या अधिकारियों के यहां आय से अधिक संपत्ति का खुलासा ये घटनाएं दर्शाती हैं कि यदि भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश नहीं लगाया गया, तो विकास की गति बाधित हो सकती है। इसलिए अब समय आ गया है कि देश भ्रष्टाचार के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करे। भ्रष्टाचार केवल आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि यह एक सामाजिक और नैतिक समस्या भी है। यह व्यवस्था को भीतर से खोखला करता है। छोटे कर्मचारियों से लेकर उच्च पदों पर बैठे लोगों तक, यदि कर्तव्य की उपेक्षा कर निजी लाभ को प्राथमिकता दी जाती है, तो वह भ्रष्टाचार ही है। आज इसकी जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि यह राष्ट्रीय समस्या का रूप ले चुकी है। भ्रष्टाचार का मूल कारण मनुष्य की अनियंत्रित लालसा है। जब व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं से अधिक पाने की इच्छा में नैतिक सीमाएं लांघता है, तब भ्रष्टाचार जन्म लेता है। भाई-भतीजावाद, परिवारवाद, सांप्रदायिकता और जातीयता जैसे तत्व भी इसे बढ़ावा देते हैं। परिणामस्वरूप रिश्वतखोरी, मिलावट, फजीर्वाड़ा और अनियमित नियुक्तियां जैसी समस्याएं समाज में फैलती हैं। हालिया रिपोर्टों के अनुसार, कई योजनाओं में बड़े पैमाने पर अनियमितताएं सामने आई हैं। राशन वितरण से लेकर परिवहन तक में कागजी घोटालों की बात सामने आई है। इसी तरह, कुछ अधिकारियों के पास उनकी आय से कई गुना अधिक संपत्ति मिलने के मामले भी उजागर हुए हैं। ये उदाहरण बताते हैं कि निगरानी तंत्र को और सशक्त बनाने की आवश्यकता है। यदि भारत को महाशक्ति बनना है, तो तकनीकी प्रगति, श्रम लागत और शासन की पारदर्शिता के साथ-साथ भ्रष्टाचार पर नियंत्रण भी जरूरी है। भ्रष्टाचार से देश की पूंजी का दुरुपयोग होता है और विकास की ऊर्जा भटक जाती है। अंतर्राष्ट्रीय सूचकांकों में भी भारत की स्थिति इस कारण प्रभावित होती है। भ्रष्टाचार के समाधान के लिए कठोर कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है। साथ ही, प्रशासनिक पारदर्शिता, जवाबदेही और जनभागीदारी को बढ़ाना होगा। केवल सरकार ही नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों धार्मिक, सामाजिक और स्वयंसेवी संस्थाओं को मिलकर इस बुराई के खिलाफ आवाज उठानी होगी। साथ ही, समाज में भ्रष्टाचार के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना भी जरूरी है। जब तक भ्रष्टाचारियों का सामाजिक महिमामंडन होता रहेगा, तब तक इस समस्या का समाधान संभव नहीं है। ईमानदारी और नैतिकता को सामाजिक सम्मान मिलना चाहिए। भारत को अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए भ्रष्टाचार के खिलाफ एक निर्णायक कालखंड की शुरूआत करनी होगी। यह केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जागरूकता और सहभागिता से ही संभव होगा। यदि हम सामूहिक रूप से इस दिशा में कदम बढ़ाएं, तभी विकसित और सशक्त भारत का सपना साकार हो सकेगा।

विश्व नवकार दिवस का भव्य ऐतिहासिक आयोजन

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया

विश्व नवकार दिवस के अवसर पर 9 अप्रैल गुरुवार को पूरे विश्व के 108 से अधिक देशों में 6000 से अधिक मंदिरों, स्थानकों, उपासरों, स्वाध्याय भवनों एवं अन्य स्थलों पर प्रातः 8:01 बजे से 9:36 बजे तक णमोकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया गया। यह आयोजन आस्था, एकता और आध्यात्मिक ऊर्जा का अद्भुत उदाहरण बना। विगत 35 वर्षों से पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय राष्ट्र गौरव पारस जैन ₹पार्श्वमणि₹ ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर का मुख्य कार्यक्रम विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह उपस्थित रहे। उन्होंने णमोकार महामंत्र के आध्यात्मिक महत्व और मानव जीवन में उसके सकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर जीटो एपेक्स के चेयरमैन पृथ्वीराज कोठारी, अध्यक्ष विजय भंडारी, मुख्य सचिव ललित डांगी सहित कार्यकारिणी के सदस्यों ने गृहमंत्री का स्वागत कर स्मृति चिन्ह भेंट किया तथा 9 अप्रैल को विश्व नवकार दिवस के रूप में औपचारिक मान्यता देने का आग्रह भी किया। कोटा में भी इस अवसर पर विशेष उत्साह देखने को मिला। यहां 5000 से अधिक श्रद्धालुओं ने विभिन्न स्थानों पर सामूहिक रूप से णमोकार महामंत्र का जाप किया। एलेन सत्यार्थ में फाउंडर डायरेक्टर राजेश माहेश्वरी, गीता भवन में भाजपा नेता एवं समाजसेवी पंकज मेहता तथा एक्जोटिका रिसॉर्ट्स में डॉ जितेंद्र भंडारी के नेतृत्व में कार्यक्रम आयोजित हुए, जहां मंत्र की महिमा और उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। अकलंक स्कूल में मेघना जैन ने बच्चों को सरल भाषा में णमोकार महामंत्र का अर्थ समझाया, जिसके बाद सभी विद्यार्थियों ने सामूहिक वाचन किया। इस आयोजन ने नई पीढ़ी को भी आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ने का कार्य किया। जीटो कोटा चैप्टर के चेयरमैन पंकज सेठी और मुख्य सचिव नरेंद्र जैन ने बताया कि इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन डॉ जे के सिंघवी, वाइस चेयरमैन पवन जैन, कोषाध्यक्ष नकुल जैन सहित संयोजक मनोज जैन, पंकज जैन, नितेश जैन, डॉ समीर मेहता, गजेंद्र जैन, अतुल सेठिया, ध्याता जैन बजाज, नरेश जैन वैद, रेखा हिंगड़ सहित अनेक सदस्य विभिन्न स्थलों पर उपस्थित रहे। लेडीज विंग की चेयरपर्सन मंजू लुंकड़ और मुख्य सचिव रेखा जैन ने बताया कि चित्रा बागरेचा, निशा जैन वैद, अनिता जैन, सुमन मुनोत, नीरा जैन और प्रिया सेठी सहित सभी महिला सदस्यों ने मंत्र वाचन के साथ-साथ व्यवस्थाओं में सक्रिय सहयोग दिया। यूथ विंग के चेयरमैन सिद्धार्थ जैन, मुख्य सचिव ईशान गोधा, अतिवीर जैन, अक्षत जैन, निशांत जैन, अभिषेक जैन टोरड़ी, प्रासुक जैन और शुभम जैन ने एक्जोटिका रिसॉर्ट्स एवं अकलंक स्कूल में कार्यक्रम के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम के अंत में रेखा हिंगड़ द्वारा मांगलिक का वाचन किया गया, जिससे पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया।

प्रस्तुतिः
पारस जैन 'पार्श्वमणि'
पत्रकार, कोटा (राजस्थान)

आचार्य श्री प्रज्ञा सागर जी महाराज के सान्निध्य में अमृत स्नान महोत्सव सम्पन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया। वात्सल्य रत्न आचार्य प्रज्ञा सागर जी महाराज के 41वें गृह त्याग दिवस के उपलक्ष्य में श्री दिगंबर जैन मंदिर, महारानी फार्म, गायत्री नगर में भव्य अमृत स्नान महोत्सव का आयोजन किया गया। यह आयोजन प्रातः 8:30 बजे आचार्य श्री के सान्निध्य और आशीर्वाद में मंदिर प्रबंध समिति के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम की शुरूआत धर्मसभा में मंजू सेवा वाली द्वारा मंगलाचरण से हुई। इसके पश्चात गजेंद्र प्रीति छाबड़ा परिवार द्वारा आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन कर शास्त्र भेंट किए गए। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष कैलाश छाबड़ा, उपाध्यक्ष अरुण शाह तथा संयुक्त मंत्री मुकेश सोगानी ने गुरु आस्था परिवार के प्रांतीय अध्यक्ष देवेंद्र बाकलीवाल (निमोडिया) एवं गजेंद्र छाबड़ा का स्वागत एवं अभिनंदन किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने णमोकार महामंत्र के महत्व पर प्रकाश डाला और समाज से आग्रह किया कि 24 घंटे का अखंड सामूहिक पाठ आयोजित किया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि यह मंत्र आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का सर्वोत्तम माध्यम है। अमृत स्नान महोत्सव के अंतर्गत आचार्य श्री ने मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया और लगभग 1 घंटे तक विभिन्न मुद्राओं में ऋद्धि मंत्रों से स्नान कराया। इस दौरान पुरुष श्रद्धालु सफेद वस्त्रों में तथा महिलाएं पीले वस्त्रों में उपस्थित रहीं, जिससे वातावरण अत्यंत आध्यात्मिक एवं भव्य बन गया। आचार्य श्री ने श्रद्धालुओं को मंत्रित श्रीफल प्रदान कर उसके उपयोग की विधि भी बताई। उन्होंने कहा कि इस श्रीफल को घर, पूजा स्थल एवं रसोई में रखने से रोग-शोक की शांति तथा विद्या एवं धन की प्राप्ति में सहायता मिलती है। कार्यक्रम का संचालन मंदिर प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष अरुण शाह ने किया। उन्होंने बताया कि यह अमृत स्नान महोत्सव पहली बार आयोजित किया गया, जो अत्यंत ऐतिहासिक और प्रेरणादायक रहा। उन्होंने आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कोटि-कोटि नमन किया।

विश्व णमोकार मंत्र दिवस पर वेबिनार सम्पन्न

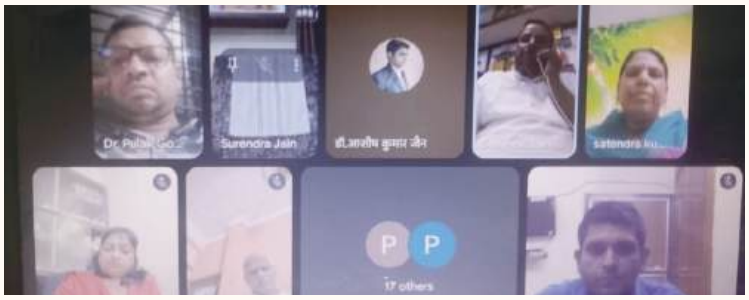

शाबाश इंडिया। विश्व णमोकार मंत्र दिवस के उपलक्ष्य में श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. अशोक कुमार जैन, कानपुर ने की, जबकि परिषद के वरिष्ठ संरक्षक प्रो. रमेश चन्द्र जैन, नई दिल्ली के आशीर्वचन प्राप्त हुए। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन (भारती), बुरहानपुर उपस्थित रहे। अन्य वक्ताओं में पं. संजीव कुमार जैन (महरोनी, उत्तर प्रदेश), डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन (जयपुर), डॉ. पुलक गोयल (जबलपुर), डॉ. उज्ज्वला गोसावी (औरंगाबाद), डॉ. पंकज जैन (इंदौर) तथा डॉ. सोनू जैन (उदयपुर) ने अपने विचार व्यक्त किए। वक्ताओं ने णमोकार मंत्र के आध्यात्मिक और व्यावहारिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह मंत्र न केवल आत्मशुद्धि का माध्यम है, बल्कि विश्वशांति का आधार भी बन सकता है। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर के द्वार पर णमोकार मंत्र लिखना चाहिए तथा आपसी व्यवहार में ''णमो जिणाणं'' का प्रयोग करना चाहिए। वक्ताओं ने यह भी बताया कि णमोकार मंत्र की शक्ति इतनी व्यापक है कि इसके प्रभाव से तिर्यंच जीव भी देवगति को प्राप्त हो सकते हैं, तो मनुष्य के लिए सद्गति प्राप्त करना और भी सहज हो सकता है। उन्होंने कहा कि णमोकार मंत्र के प्रभावपूर्ण वातावरण में जन्म प्राप्त करने हेतु जीवन के अंत समय में भी इस मंत्र का स्मरण आवश्यक है। कार्यक्रम में यह भी विचार व्यक्त किया गया कि आज के वैश्विक तनावपूर्ण वातावरण में णमोकार मंत्र की ध्वनि विश्व में शांति स्थापित करने का सशक्त माध्यम बन सकती है। कार्यक्रम की शुरूआत स्वागत भाषण से हुई, जिसे डॉ. अल्पना जैन (मालेगांव) ने प्रस्तुत किया। मंगलाचरण प्राकृत भाषा में श्रीमती पल्लवी जैन (जबलपुर) एवं श्री जितेन्द्र जैन (अहमदाबाद) द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संयोजन एवं सफल संचालन डॉ. दर्शना जैन (जयपुर) ने किया। अंत में डॉ. नीलम सर्राफ द्वारा आभार व्यक्त किया गया तथा जिनवाणी स्तुति के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

राजवंश पब्लिक स्कूल में साइबर क्राइम जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर के बरकत नगर स्थित राजवंश पब्लिक स्कूल में साइबर क्राइम जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशन में आयोजित हुआ, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को डिजिटल सुरक्षा, कानूनी जानकारी तथा मोबाइल के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना था। विद्यालय की निदेशक श्रीमती सीता चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि यह कार्यक्रम माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट न्यायिक मजिस्ट्रेट श्रीमती ललिता सोनी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं। अपने संबोधन में ललिता सोनी ने विद्यार्थियों को साइबर क्राइम के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया और उन्हें डिजिटल दुनिया में सतर्क रहने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि मोबाइल का अत्यधिक उपयोग बच्चों की मानसिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, जिससे अवसाद, पढ़ाई में गिरावट और नींद संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। विद्यालय के सचिव अनिमेष चौहान ने सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग पर जोर देते हुए कहा कि फर्जी अकाउंट बनाना, साइबर बुलिंग करना, बिना अनुमति किसी की निजी फोटो साझा करना, धमकी भरे संदेश भेजना और निजी जानकारी मांगना कानूनन अपराध है। उन्होंने विद्यार्थियों से ऐसे कृत्यों से दूर रहने की अपील की। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य नवल जैन ने अतिथियों—श्री दिनेश शर्मा, श्री मुकेश कुमार एवं अन्य आगंतुकों—का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया। उन्होंने विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा के नियमों का पालन करने और जिम्मेदार डिजिटल नागरिक बनने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थी एवं समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

पाखंड के विरुद्ध आवाज या धर्म विरोध ?

एक कटु सत्य, जिसे अब अनसुना नहीं किया जा सकता

हम बार-बार एक ही बात कहते हैं, और पूरे साहस के साथ कहते हैं—हम जैन धर्म के विरोधी नहीं हैं। हम उस पाखंड, उस आडंबर, उस दिखावे के विरोधी हैं, जिसने धीरे-धीरे जैन धर्म की पवित्र आत्मा को जकड़ लिया है। लेकिन जैसे ही कोई इस सड़ांध को उजागर करता है, उसे तुरंत 'धर्म विरोधी' घोषित कर दिया जाता है। और यहीं सबसे बड़ा प्रश्न खड़ा होता है—क्या आज जैन समाज में पाखंड और आडंबर ही धर्म का पर्याय बन चुके हैं? क्या अब सच्चाई बोलना, सवाल पूछना, और गलत को गलत कहना ही अपराध हो गया है? अगर ऐसा है, तो यह केवल एक व्यक्ति की नहीं, पूरे समाज की हार है। जैन धर्म की नींव त्याग, तप, संयम और सत्य पर रखी गई थी। हमारे तीर्थंकरों ने नंगे पैर तप किया, भूखे रहकर आत्मा को शुद्ध किया, और संसार को यह सिखाया कि धर्म भीतर की यात्रा है, बाहर का प्रदर्शन नहीं। लेकिन आज स्थिति क्या है? आज धर्म के नाम पर मंच सजाए जा रहे हैं, भीड़ इकट्ठा की जा रही है, चंदे के आंकड़े गिनाए जा रहे हैं, और भक्ति को भी प्रतिस्पर्धा बना दिया गया है। आज अगर कोई साधु या प्रवचनकर्ता सादगी से जीवन जीता है, तो वह पीछे छूट जाता है, और जो आडंबर करता है, प्रचार करता है, वही महान बन जाता है। क्या यही जैन धर्म है? क्या यही वह मार्ग है, जिसके लिए हमारे तीर्थंकरों ने सब कुछ त्याग दिया था? सच्चाई यह है कि आज धर्म नहीं, 'धर्म का व्यापार' चल रहा है। और इस व्यापार को बचाने के लिए, हर उस आवाज को दबाया जाता है जो सवाल उठाती है। क्योंकि सवाल उठेगा तो जवाब देना पड़ेगा, और जवाब देने के लिए ईमानदारी चाहिए—जो आज दुर्लभ होती जा रही है। जब हम लिखते हैं, तो हमारा उद्देश्य किसी व्यक्ति विशेष को नीचा दिखाना नहीं होता। हम उस मानसिकता पर प्रहार करते हैं, जिसने धर्म को एक तमाशा बना दिया है। लेकिन दुख इस बात का है कि समाज सच्चाई सुनने के बजाय, सच्चाई कहने वाले को ही कटघरे में खड़ा कर देता है।

लोग कहते हैं—आप धर्म के खिलाफ लिखते हैं।

हम पूछते हैं—क्या पाखंड ही धर्म है?

अगर हाँ, तो हम सच में उसके खिलाफ हैं।

लेकिन अगर धर्म सच्चाई, संयम और आत्मशुद्धि का नाम है, तो हम उसी के पक्ष में खड़े हैं—और पूरी ताकत से खड़े हैं।

यह लड़ाई किसी व्यक्ति की नहीं है, यह लड़ाई उस आत्मा की है, जो धीरे-धीरे दिखावे के बोझ तले दबती जा रही है। यह संघर्ष उस सत्य का है, जो शोर में कहीं खो गया है।

अब समय आ गया है कि समाज खुद से सवाल पूछे—क्या हम सच में धर्म का पालन कर रहे हैं, या केवल उसका अभिनय कर रहे हैं? क्या हम तीर्थंकरों के मार्ग पर चल रहे हैं, या केवल उनके नाम का उपयोग कर रहे हैं?

अगर आज भी हम नहीं जागे, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें माफ नहीं करेंगी। वे पूछेंगी—जब धर्म के नाम पर पाखंड बढ़ रहा था, तब आप क्या कर रहे थे?

और उस दिन हमारे पास कोई उत्तर नहीं होगा।

इसलिए हम लिखेंगे, बार-बार लिखेंगे, और तब तक लिखेंगे जब तक समाज जाग नहीं जाता। चाहे हमें कुछ भी कहा जाए—धर्म विरोधी, विवादित, या कुछ और—लेकिन हम सच का साथ नहीं छोड़ेंगे। क्योंकि हमारे लिए धर्म कोई दिखावा नहीं है, धर्म एक साधना है और साधना में सत्य से बड़ा कोई आभूषण नहीं होता।

नितिन जैन-संयोजक: जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा)
जिलाध्यक्ष — अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, पलवल
मोबाइल: 9215635871

अक्षय तृतीयास रैपिड ओपन शतरंज प्रतियोगिता 2026 के पोस्टर का विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर के मानसरोवर स्थित परिष्कार कॉलेज ऑफ ग्लोबल एक्सीलेंस में आयोजित होने वाली ''अक्षय तृतीया'' रैपिड ओपन शतरंज प्रतियोगिता 2026 के पोस्टर का शुक्रवार को विधिवत विमोचन किया गया। टूर्नामेंट कोऑर्डिनेटर जिनेश कुमार जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर पर कॉलेज के डायरेक्टर डॉ. राघव प्रकाश एवं प्रिंसिपल डॉ. सविता पाईवाल ने संयुक्त रूप से पोस्टर का विमोचन कर प्रतियोगिता के सफल आयोजन की शुभकामनाएं दीं। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास, एकाग्रता और निर्णय क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शतरंज जैसे खेलों को प्रोत्साहन देने से नई प्रतिभाओं को आगे आने का अवसर मिलता है। जयपुर जिला शतरंज संघ के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट विक्रम सिंह ने बताया कि यह प्रतियोगिता 19 अप्रैल 2026 को आयोजित की जाएगी, जिसमें विभिन्न आयु वर्ग के खिलाड़ी भाग लेंगे। प्रतियोगिता का आयोजन जयपुर चेस अकादमी द्वारा किया जा रहा है, जिसे जयपुर जिला शतरंज संघ से मान्यता प्राप्त है तथा जयपुर चेस क्लब एवं वाणी चेस क्लब का सहयोग प्राप्त है। प्रतियोगिता में कुल लगभग 25000 रुपये की पुरस्कार राशि, 39 ट्रॉफियां और मेडल प्रदान किए जाएंगे। ओपन वर्ग में प्रथम पुरस्कार 5000 रुपये, द्वितीय 3500 रुपये, तृतीय 2500 रुपये, चतुर्थ 1800 रुपये, पंचम 1500 रुपये तथा षष्ठ 1200 रुपये निर्धारित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त 7वें से 9वें स्थान तक 1000 रुपये, 10वें से 12वें स्थान तक 700 रुपये, 13वें से 16वें स्थान तक 600 रुपये तथा 17वें से 20वें स्थान तक 500 रुपये के पुरस्कार दिए जाएंगे। विभिन्न आयु वर्ग–अंडर 7, 9, 11, 13 और 15–के साथ-साथ महिला एवं वरिष्ठ खिलाड़ियों के लिए भी विशेष पुरस्कार रखे गए हैं। आयोजकों ने अधिक से अधिक खिलाड़ियों से प्रतियोगिता में भाग लेकर आयोजन को सफल बनाने की अपील की है।

जिनेश कुमार जैनः टूर्नामेंट कोऑर्डिनेटर, मोबाइलः 9887977479

'शर्म छोड़ो, स्वास्थ्य चुनो' कार्यक्रम का आयोजन

सीकर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति एवं एम आर एम जीवन संजीवनी हेल्थ एंड वेलनेस एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में, नारायणा हॉस्पिटल, जयपुर के सहयोग से 'शर्म छोड़ो, स्वास्थ्य चुनो' विषय पर एक विशेष स्वास्थ्य चर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए महासमिति की अध्यक्ष सुमन बडजात्या एवं मंत्री विनीता काला ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य महिलाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना और उन्हें खुलकर अपनी समस्याएं साझा करने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम में जयपुर से पधारी वरिष्ठ यूरोगाइनेकोलॉजिस्ट एवं रोबोटिक पेल्विक रिकंस्ट्रक्टिव सर्जन डॉ. इंदिरा सरीन ने महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अस्वच्छ खानपान और असंतुलित जीवनशैली के कारण महिलाओं में कई प्रकार की बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। डॉ. सरीन ने महिलाओं से आग्रह किया कि वे संकोच छोड़कर अपनी स्वास्थ्य समस्याओं पर खुलकर चर्चा करें और समय पर चिकित्सकीय परामर्श लें। उन्होंने कहा कि समाज में महिलाओं की भूमिका निरंतर सशक्त हो रही है, इसलिए उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित महिलाओं ने भी अपनी समस्याएं साझा कीं और विशेषज्ञ से समाधान प्राप्त किया। स्वास्थ्य चर्चा में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण के महत्व पर भी जोर दिया गया। स्वस्थ जीवन के लिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और स्वच्छ वातावरण को अनिवार्य बताया गया। इस अवसर पर महासमिति के पूर्व पदाधिकारी, विशिष्ट सदस्य एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे। साथ ही मार्केटिंग सेल्स मैनेजर विकास शर्मा, कोऑर्डिनेटर अजय चौधरी, रोहित माथुर और प्रियंक जैन भी कार्यक्रम में शामिल हुए। महासमिति की अध्यक्ष सुमन बडजात्या, मंत्री विनीता काला तथा एम आर एम जीवन संजीवनी के रोहित माथुर सहित समस्त कार्यकारिणी ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

नवप्रवेशी बच्चों का फूलमालाओं से स्वागत

पिंडवाड़ा. शाबाश इंडिया

ब्लॉक के निकटवर्ती गांव नांदिया स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्राथमिक परिसर में नवप्रवेशी बच्चों का तिलक लगाकर एवं फूलमालाएं पहनाकर गर्मजोशी से स्वागत किया गया। विद्यालय के मीडिया प्रभारी एवं शिक्षक गुरुदीन वर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले बच्चों का शिक्षकों द्वारा विशेष रूप से अभिनंदन किया गया, जिससे उनमें विद्यालय और पढ़ाई के प्रति उत्साह बना रहे। इस अवसर पर नवप्रवेशी बच्चों को कॉपी और पेंसिल भी वितरित की गई। साथ ही शिक्षक गुरुदीन वर्मा ने बच्चों को हर महीने लेखन सामग्री उपलब्ध कराने का संकल्प भी लिया, ताकि उनकी पढ़ाई में निरंतरता बनी रहे। कार्यक्रम के दौरान शिक्षक धनराज लोहार, पंचायत शिक्षक सांकलाराम देवासी एवं विक्रम कुमार गर्ग उपस्थित रहे और सभी ने बच्चों को शुभकामनाएं दीं। विद्यालय प्रशासन के अनुसार, पिछले दो दिनों में कक्षा 1 में 8 बच्चों का प्रवेश किया जा चुका है, जबकि अन्य 8 बच्चों को भी प्रवेश के लिए चिन्हित किया गया है। शिक्षकों द्वारा इन बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

न्यायिक गरिमा के सानिध्य में भव्य पोस्टर विमोचन, 13 से 18 अप्रैल तक लगेगा मेगा सर्जरी परामर्श शिविर

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर शहर में स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में एक नई पहल के तहत मेट्रो ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स द्वारा आयोजित मल्टीस्पेशियलिटी सर्जरी परामर्श सप्ताह (13 से 18 अप्रैल 2026) के पोस्टर का गरिमामय वातावरण में विमोचन किया गया। इस अवसर पर न्यायिक क्षेत्र की प्रतिष्ठित हस्ती जस्टिस नगेंद्र कुमार जैन ने अपने करकमलों से पोस्टर का विमोचन किया। अपने गौरवपूर्ण कार्यकाल में वे राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, कर्नाटक एवं मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, हिमाचल प्रदेश के लोकायुक्त तथा राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पदों पर सेवाएं दे चुके हैं। उनकी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष गरिमा प्रदान की। ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन की कोषाध्यक्ष मनीषा जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्था के संस्थापक अध्यक्ष प्रमोद जैन भंवर उपस्थित रहेंगे। इस 6 दिवसीय परामर्श सप्ताह के दौरान जनरल सर्जरी, ऑथोपेडिक, हृदय शल्य चिकित्सा, न्यूरो, स्त्री रोग, यूरोलॉजी, नेत्र एवं ईएनटी जैसी विभिन्न विशेषज्ञ सेवाएं एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराई जाएंगी। शिविर में मरीजों को निःशुल्क जांच, विशेषज्ञ परामर्श तथा विभिन्न उपचारों पर विशेष छूट का लाभ मिलेगा, जिससे आमजन को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ हो सकें। अस्पताल प्रबंधन के अनुसार, इस शिविर का उद्देश्य केवल उपचार उपलब्ध कराना ही नहीं, बल्कि लोगों को समय पर सर्जरी और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना भी है। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया तथा अधिक से अधिक लोगों से इस शिविर का लाभ उठाने का आह्वान किया गया।

मान स्तंभ महामस्तकाभिषेक संपन्न, मनुष्य जीवन सार्थक बनाने का संदेश

इंदौर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन आदिनाथ जिनालय, छत्रपति नगर में मान स्तंभ महामस्तकाभिषेक समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि विमल सागर जी महाराज ने कहा कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है, इसे व्यर्थ न गंवाकर श्रद्धा, विवेक और संकल्प के साथ भगवान के चरणों में समर्पण करना चाहिए। मुनि अनंतसागर जी भी उपस्थित रहे।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

दिल्ली में कोल्हापुर के अभिषेक और प्रणिता पाटील 'जैन इंस्पिरेशनल यूथ अवॉर्ड' से सम्मानित

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया। आचार्य श्री प्रज्ञसागर जी महाराज के सानिध्य में आयोजित एक भव्य समारोह में कोल्हापुर के युवा दंपती, श्री अभिषेक अशोक पाटील और सौ. प्रणिता पाटील को 'जैन इंस्पिरेशनल यूथ अवॉर्ड' से नवाजा गया। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री रामदास आठवले, केंद्रीय मंत्री रक्षा खडसे और लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स धारक 'साड़ी क्वीन' डॉली जैन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। कार्यक्रम का उत्कृष्ट संयोजन श्री अविरल जैन द्वारा किया गया। अभिषेक पाटील (कार्याध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद, कोल्हापुर) का जन्मस्थान कुंभोज है। उन्होंने आचार्य शांतिसागर पाठशाला और बाहुबली स्थित एम.जी. शहा विद्या मंदिर से धार्मिक संस्कार प्राप्त किए हैं। वहीं, प्रणिता पाटील आचार्य श्रुतसागर जी महाराज (हसुरकर) के पूर्वाश्रमी के पुत्र श्री तेजकुमार माणगावे की सुपुत्री हैं। यह दंपती कोल्हापुर में वीर सेवा दल (रुईकर कॉलोनी), महावीर गाट फाउंडेशन और दिगंबर जैन युवा परिषद के माध्यम से सामाजिक व धार्मिक कार्यों में सक्रिय है। सोशल मीडिया के दौर में वे **'Wonderful Jain Dharm' और 'Namokaar Mahamantra'** जैसे इंस्टाग्राम पेजों के जरिए जैन धर्म की प्रभावना को वैश्विक स्तर पर पहुँचा रहे हैं। उनकी इस निःस्वार्थ सेवा के लिए उन्हें दिल्ली में इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सौरभ जैन की मोटिवेशनल स्पीच के साथ प्रशिक्षुता कार्यक्रम का समापन

युक्ति जैन रहीं की-नोट स्पीकर

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में 1 अप्रैल से प्रारंभ हुए दस दिवसीय प्रशिक्षुता कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष नरेश कुमार सेठी ने की। यह आयोजन महाविद्यालय एवं एनेक्स्ट्सः ए वेंचर ऑफ प्रज्ञा के संयुक्त तत्वावधान में तथा आई क्यू ए सी समन्वयक डॉ. श्रुति पारीक के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

समापन सत्र में मोटिवेशनल गुरु सौरभ जैन ने विद्यार्थियों को साक्षात्कार की तैयारी, प्रभावी बायोडाटा निर्माण, पूर्व तैयारी के महत्व तथा कठिन प्रश्नों का आत्मविश्वास के साथ उत्तर देने के तरीके बताए। उन्होंने यह भी समझाया कि अनजान प्रश्न आने पर कैसे संवाद को अपनी रुचि के विषय की ओर मोड़ा जा सकता है। इससे पूर्व नौ दिनों तक की-नोट स्पीकर युक्ति जैन ने विद्यार्थियों को प्रभावी परिचय देने की कला, आत्मविश्वास बढ़ाने की तकनीक, सकारात्मक सोच, संबंधों और सफलता के बीच संतुलन, बॉडी लैंग्वेज, संप्रेषण कौशल, तनाव प्रबंधन, प्रस्तुति निर्माण एवं साक्षात्कार कौशल का प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम के अंत में संस्था अध्यक्ष नरेश कुमार सेठी, मंत्री महेश चंद्र चांदवाड़ तथा सौरभ जैन ने युक्ति जैन का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सत्यव्रत मिश्र एवं असिस्टेंट प्रोफेसर अनिल जैन ने किया। उन्होंने पूरी मोटिवेशनल टीम–सौरभ जैन, युक्ति जैन, अनीषा एवं युवराज–का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का प्रतिदिन यूट्यूब पर प्रसारण भी किया गया। राष्ट्रगान के साथ दस दिवसीय प्रशिक्षुता कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

आगरा में उपाध्यायश्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश, जयकारों से गूंजा कमला नगर

आगरा. शाबाश इंडिया

मेडिटेशन गुरु उपाध्याय विहसंत सागर जी महाराज एवं मुनि श्री विश्वसौम्य सागर जी महाराज ससंघ का मैनपुरी से मंगल विहार करते हुए आगरा के कमला नगर स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में भव्य एवं हर्षोल्लासपूर्ण मंगल प्रवेश हुआ। मंदिर परिसर श्रद्धालुओं से खचाखच भरा रहा और पूरा वातावरण जयकारों से गूंज उठा। यह मंगल प्रवेश 23 से 27 अप्रैल 2026 तक एमडी जैन इंटर कॉलेज ग्राउंड, हरीपर्वत में आयोजित होने वाले श्री आदिनाथ पंचकल्याणक महोत्सव के शुभ अवसर पर हुआ। कमला नगर जैन समाज द्वारा उपाध्यायश्री ससंघ का भव्य स्वागत किया गया तथा श्रद्धालुओं ने पाद प्रक्षालन कर अपनी श्रद्धा अर्पित की। मंगल प्रवेश के पश्चात आयोजित धर्मसभा में उपाध्यायश्री ने धर्म, संयम, तप और आत्मकल्याण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पंचकल्याणक महोत्सव केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का सशक्त माध्यम है। कार्यक्रम के दौरान पंचकल्याणक महोत्सव से जुड़े विभिन्न पात्रों–तीर्थंकर बालक के माता-पिता, सौधर्म इंद्र, कुबेर, नायक-नायिका सहित अन्य पात्रों–का सार्वजनिक अभिनंदन किया गया। सभी को मुकुट, माला और साफा पहनाकर सम्मानित किया गया, जिससे पूरे वातावरण में उत्सव और गौरव का भाव देखने को मिला। इस अवसर पर श्री आदिनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति एवं श्री सवोतौभद्र जिनालय ट्रस्ट, बलकेश्वर के पदाधिकारी भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मनोज बाकलीवाल द्वारा किया गया। समारोह में जगदीश प्रसाद जैन, पारस जैन कंसल, पारसदास जैन, रजत जैन, पंकज जैन, अंकेश जैन, मनोज जैन बल्लो, शुभम जैन, राजीव जैन, दिलीप जैन, सुमेर जैन पांड्या, कमल जैन, आकाश जैन, नीतेश जैन, अलकृंत जैन, स्नेहलता जैन, मधु जैन कंसल, आशा जैन, अंकिता जैन अहिंसा सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। अंत में आयोजकों ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आगामी पंचकल्याणक महोत्सव में अधिक से अधिक सहभागिता का आह्वान किया।

श्री पदम प्रभु भगवान का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा के बापू नगर स्थित श्री पदम प्रभु दिगंबर जैन मंदिर में अष्टमी के पावन अवसर पर मूलनायक भगवान श्री पदम प्रभु का भव्य महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। प्रचार मंत्री प्रकाश पाटनी ने बताया कि प्रातःकाल श्रद्धालुओं ने श्री पदम प्रभु भगवान सहित अन्य प्रतिमाओं पर क्रमवार महामस्तकाभिषेक किया। इसके पश्चात प्रकाश पाटनी एवं लक्ष्मीकांत जैन द्वारा श्री पदम प्रभु, पूनमचंद सेठी द्वारा आदिनाथ भगवान तथा विनय जैन द्वारा मुनिसुव्रतनाथ भगवान पर शांतिधारा की गई। अन्य प्रतिमाओं पर भी श्रद्धापूर्वक शांतिधारा संपन्न हुई। श्रावक-श्राविकाओं ने पूजा-अर्चना कर अर्घ्य समर्पित किए और धार्मिक वातावरण में भक्ति का भाव प्रकट किया। ट्रस्ट अध्यक्ष लक्ष्मीकांत जैन ने बताया कि इस अवसर पर प्रकाश पाटनी के जन्मदिवस पर उनके परिवारजनों द्वारा मंदिर को पूजा के लिए पांच बर्तन सेट भेंट किए गए। ट्रस्ट मंत्री पूनमचंद सेठी ने सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में धमार्लुजन उपस्थित रहे। सायंकाल 48 दीपों से भक्तामर स्तोत्र की महाआरती की गई, जिससे पूरा मंदिर परिसर भक्ति और श्रद्धा से सराबोर हो उठा।

भावलिंगी संत के पुनः दिल्ली आगमन की मांग

मंशापूर्ण महावीर जिनालय में गूंजे जयकारे

मुरादनगर. शाबाश इंडिया। परम पूज्य श्रमणाचार्य विमर्श सागर जी महामुनिराज ससंघ के संभावित दिल्ली आगमन को लेकर श्रद्धालुओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर सैकड़ों भक्त श्री मंशापूर्ण महावीर जिनालय, मुरादनगर पहुंचकर गुरुचरणों में श्रीफल अर्पित करते हुए अपनी श्रद्धा व्यक्त की। इस दौरान राजधानी दिल्ली के कृष्णानगर, यमुना विहार, ऋषभ विहार, भोलानाथ नगर, राधेपुरी, शंकर नगर सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए भक्तों ने एक स्वर में आचार्य गुरुवर से पुनः दिल्ली पधारने का विनम्र आग्रह किया। श्रद्धालुओं ने कहा कि सम्पूर्ण दिल्ली आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रही है और आपके सान्निध्य की प्यास बुझाने को आतुर है। कार्यक्रम के दौरान ''हम भक्तों ने ठाना है, गुरुवर को दिल्ली लाना है'' जैसे जयघोषों से पूरा जिनालय गुंजायमान हो उठा। 'जिनागम पंथ जयवंत हो' के जयकारों ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया। श्रद्धालुओं के उत्साह और आस्था ने यह स्पष्ट कर दिया कि गुरुवर के पुनः दिल्ली आगमन को लेकर समाज में गहरी श्रद्धा और प्रतीक्षा का भाव व्याप्त है।

ग्रीष्मकालीन श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों की तैयारियां जोर-शोर से प्रारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

सांगानेर स्थित श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले ग्रीष्मकालीन श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविरों की तैयारियाँ इस वर्ष जोर-शोर से प्रारंभ हो गई हैं। संस्थान के अध्यक्ष शांति कुमार जैन एवं कार्याध्यक्ष प्रमोद जैन पहाड़िया ने बताया कि इस वर्ष 17 मई से देश-विदेश के लगभग 2000 से अधिक स्थानों पर संस्कार शिविरों का आयोजन प्रस्तावित है। इनमें से केवल जयपुर शहर में ही 50 से अधिक जैन मंदिरों में शिविर आयोजित किए जाएंगे। शिविरों में संस्थान की ओर से विद्वान एवं विदुषियों को शिक्षण कार्य हेतु भेजा जाएगा तथा पाठ्य सामग्री निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष संस्कार शिविर कार्यक्रम के मुख्य संयोजक के रूप में उत्तम चंद पाटनी को जिम्मेदारी सौंपी गई है। संस्थान के अधीन संत श्री सुधा सागर कन्या महाविद्यालय की अधिष्ठात्री व्रती श्राविका शिला जैन ड्योडा ने जानकारी देते हुए बताया कि इन शिविरों का उद्देश्य जैन धर्म की संस्कृति की अक्षुण्ण परंपरा को बनाए रखना, श्रमण संस्कृति का संवर्धन करना तथा जिनवाणी के तत्वज्ञान का प्रचार-प्रसार करना है। इसके लिए देश-विदेश में 48 क्षेत्रों हेतु क्षेत्रीय संयोजक नियुक्त किए गए हैं, वहीं छत्तीसगढ़, विदर्भ, महाराष्ट्र और राजस्थान के

कोटा, उदयपुर एवं जयपुर क्षेत्रों के लिए विशिष्ट सहयोगियों की नियुक्ति की गई है। जयपुर के लिए विनीता बोहरा एवं दीपिका बिलाला को विशिष्ट सहयोगी बनाया गया है। महाविद्यालय की निदेशिका डॉ. वंदना जैन ने बताया कि शिविरों में संस्थान के विद्वान एवं विदुषियों द्वारा जैन धर्म के मूलभूत संस्कारों की जानकारी देने के साथ-साथ प्रमुख ग्रंथों का अध्ययन भी कराया जाता है। इन शिविरों से प्रतिवर्ष 100000 से अधिक श्रावक लाभान्वित होते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि जयपुर में जैन मंदिरों के अध्यक्षों, मंत्रियों तथा श्री दिगम्बर जैन महिला समिति का इन तैयारियों में पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है।

जैन सोशल ग्रुप मार्बल्स अजमेर ने संगीतमय नवकार मंत्र व भक्ति के साथ मनाया स्थापना दिवस

अजमेर. शाबाश इंडिया

विश्व नवकार दिवस एवं स्थापना दिवस के अवसर पर जैन सोशल ग्रुप मार्बल्स, अजमेर द्वारा छोटे धड़े की नसियाजी स्थित आदिनाथ निलय में संगीतमय नवकार महामंत्र एवं भक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत दीपिका कुमठ द्वारा संगीतमय लोगस्स पाठ से हुई, जिसमें 24 तीर्थंकरों की स्तुति की गई। इसके पश्चात ग्रुप की महिला सदस्यों ने भक्ति नृत्य प्रस्तुत किए। ''मंत्र नमोकारा'' एवं ''तन्मय होकर मन को धोकर'' जैसे भजनों पर मोंटू कर्णावट, स्वाति मेहता, श्वेता सियाल, नीतू नाहर, नीलिमा सुराणा एवं अंतिमा मेहता ने आकर्षक प्रस्तुतियां दीं। प्रसिद्ध जैन भजन गायक अंकित पाटनी ने 'नवग्रह उसके रहे पक्ष में' सहित कई भजनों की प्रस्तुति देकर माहौल को भक्तिमय बना दिया। गौरव तातेड एवं मोहित गांधी ने भी भक्ति गीतों की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं, जिस पर उपस्थित श्रद्धालु भक्ति में लीन होकर नृत्य करते नजर आए। कार्यक्रम में पूर्व जिला प्रमुख पुखराज पहाड़िया, पूर्व पार्षद रूबी जैन, कमल गंगवाल, नसिया अध्यक्ष प्रदीप पाटनी, संजय जैन, संदेश बाफना, विनय चौधरी, मनोज मोड़ासिया, रूपश्री जैन, राजेश नाहर, मनोज गोधा, घेवर नाहर, विनय लोढ़ा, महेंद्र डोसी, अतुल पाटनी, मधु पाटनी, अजय मेहता, पियूष पीपाड़ा, राजेंद्र श्रीश्रीमाल, प्रकाश लोढ़ा, दिनेश मेहता, प्रीति जैन एवं पुष्पेंद्र पहाड़िया सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। ग्रुप अध्यक्ष डॉ. राजकुमार खासगीवाला ने बताया कि इसी दिन ग्रुप को जैन सोशल ग्रुप इंटरनेशनल फेडरेशन से मान्यता प्राप्त हुई। साथ ही शिल्पा खटोड़ के वर्षीतप की अनुमोदना कर उनका बहुमान किया गया।

णमोकार महामंत्र दिवस श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया गया

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद द्वारा संचालित पद्मावती पब्लिक स्कूल, मानसरोवर में 9 अप्रैल 2026 को विश्व णमोकार महामंत्र दिवस श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय की आचार्या श्रीमती हेमलता जैन ने बताया कि सभी नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से णमोकार महामंत्र का श्रद्धापूर्वक जाप किया। उन्होंने कहा कि इस मंत्र के नियमित जाप से मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जिससे मानसिक शांति मिलती है तथा जीवन की अनेक बाधाएं दूर होती हैं। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिसर में आध्यात्मिक ऊर्जा, अनुशासन और भक्ति का वातावरण बना रहा। विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

भागवत पुराण मानव से मानवता का सुगम पथः संत अभयदास महाराज

निमगोरिया क्षेत्रपाल का दशम पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

भीनमाल

श्रीमद भागवत कथा ज्ञान महायज्ञ के सप्तम एवं अंतिम दिवस पर कथा वाचक संत अभयदास महाराज ने कहा कि भागवत पुराण मानव को मानवता की ओर ले जाने का सरल और प्रेरक मार्ग है। उन्होंने राधा-रुक्मिणी प्रसंग के माध्यम से बताया कि यह ज्ञान महायज्ञ चिंता से चिंतन, जड़ता से ज्ञान और आत्मिक उन्नति की ओर ले जाने वाला साधन है। अंतिम दिवस पर सुदामा चरित्र, परीक्षित मोक्ष और व्यासपीठ की विदाई के साथ प्रसाद वितरण का भावपूर्ण आयोजन किया गया। सुदामा और श्रीकृष्ण की अटूट मित्रता का वर्णन करते हुए निस्वार्थ प्रेम और भक्ति का संदेश दिया गया। साथ ही सुखदेव मुनि द्वारा राजा परीक्षित को दिए गए अंतिम उपदेशों के माध्यम से जीवन में भक्ति, गौ-सेवा और सदाचार के महत्व पर प्रकाश डाला गया। भजन-कीर्तन के दौरान श्रद्धालु ''हरि नाम संकीर्तन'' में भावविभोर होकर नृत्य करते नजर आए। कार्यक्रम का समापन विश्राम आरती, पुष्पांजलि एवं प्रसाद वितरण के साथ हुआ। इस अवसर पर निमगोरिया क्षेत्रपाल मंदिर के दशम पाटोत्सव के तहत वैदिक मंत्रोच्चार के साथ शुभ मुहूर्त में अमर ध्वजा चढ़ाई गई। ट्रस्ट कोषाध्यक्ष पहाड़सिंह राव एवं सचिव दिनेश दवे ने बताया कि गंग सरोवर, जाखोब तालाब स्थित आनंद घाट पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। ढोल-नगाड़ों की थाप, उड़ते गुलाल, पुष्प वर्षा और महिलाओं के मंगलगीतों ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम के दौरान क्षेत्रपाल भगवान का

महापूजन, गणेश-गौरी पूजन एवं हवन कर विश्व मंगल की कामना की गई। संचालन डॉ. घनश्याम व्यास ने किया। कथा के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले कार्यकर्ताओं का ट्रस्ट पदाधिकारियों द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य नागरिक, प्रशासनिक अधिकारी एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

जिंदगी का परिणाम बदलना है तो प्रणाम करना प्रारंभ कर दो: पंडित प्रदीप मिश्रा

मेडिसिटी ग्राउण्ड में सात दिवसीय श्री शिव महापुराण कथा आयोजन का तीसरा दिन

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

मेवाड़ की पावन धरा भीलवाड़ा की भूमि पर श्री महाशिवपुराण कथा का श्रवण कराने पहली बार पधारे प्रख्यात कथावाचक ''कुबेर भण्डारी'' पंडित प्रदीप मिश्रा के मुखारबिंद से कथा सुनने के लिए जनमैदिनी का सैलाब दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। हालात ये हो गए है कि सात दिवसीय कथा के तीसरे दिन शुक्रवार को मेडिसिटी ग्राउण्ड के साढ़े चार लाख वर्ग फीट में फैले डोम ओर पाइप पांडाल ओर उसके बाहरी क्षेत्र में भी श्रद्धालुओं को बैठने की जगह मिलना मुश्किल हो गया था। आस्था से ओतप्रोत सैकड़ो श्रद्धालु मेडिसिटी ग्राउण्ड के बाहर भी खड़े होकर तल्लीनता से कथा श्रवण कर रहे थे। संकटमोचन हनुमान मंदिर के महन्त बाबूगिरीजी महाराज के सानिध्य में हो रही कथा के तीसरे दिन पंडित प्रदीप मिश्रा ने शिव महापुराण के प्रसंग की चर्चा करते हुए कहा कि यदि अपनी जिंदगी का परिणाम बदलना है तो प्रणाम करना प्रारंभ कर दो। हम श्री शिवाय नमस्तुभयं के माध्यम से भी भोले बाबा को बार-बार प्रणाम करते है। प्रणाम करने से दुःख हटकर सुख आना प्रारंभ हो जाता है। संसार में पूजनीय बनने के लिए पूजन करना ही पड़ेगा। उन्होंने कहा कि हमारी आस्था ही पत्थर की मूर्ति को भगवान बनाती है। जब तक हमारा मन नहीं बदलेगा हम घर में कितना भी बदलाव कर ले शांति नहीं मिलेगी। जीवन में संत बनना सरल पर गृहस्थ बनना कठिन होता है। पारिवारिक झंझटो के बीच भगवान का भजन करना कठिन होता। महाराजश्री ने कहा कि भीलवाड़ावासी भाग्यशाली है कि घरेलु व्यस्तता के बीच भी प्रतिदिन तीन घंटे का समय निकाल कथा श्रवण करने आ रहे है। भाव हो तो भगवान को भी आना पड़ता है। अपने भावों को परमात्मा से जोड़ने को उपवास कहते है। नयन, इन्द्रियों, वाणी, जिव्हा व श्रवण का संयम रखने पर भगवान शिव की कृपा होती है। कथा के तीसरे दिन कथा के प्रारंभ में व्यास पीठ पर विराजित पंडित मिश्रा का अभिनंदन करने वालों में हरिशेवाधाम भीलवाड़ा के महामंडलेश्वर हंसारामजी महाराज, पंचमुखी दरबार के महन्त लक्ष्मणदास त्यागी आदि शामिल थे। स्वायत शासन मंत्री झाबरसिंह खर्रा एवं विधायक गोपाल खण्डेलवाल ने व्यास पीठ पर विराजित पंडित प्रदीप मिश्रा का अभिनंदन कर आशीर्वाद लिया। तीसरे दिन की प्रातःकालीन पूजा एवं कथा विश्राम पर व्यास पीठ की आरती करने वालों में जजमान श्रीगोपाल राठी, अशोक बाहेती, रामेश्वरलाल काबरा, भैरूलाल जागेटिया, राधेश्याम चेचाणी, विनीत अग्रवाल, कन्हैयालाल नैना स्वर्णकार, राजेश कुदाल, रजनीकांत आचार्य, गोपी पाटोदिया, केसी प्रहलादका, रामेश्वरलाल ईनाणी, बद्रीलाल सोमानी, अनिल दाधीच, निर्मल जोशी, पवन नागौरी, अलका गोपाल जोशी, जगदीश वैष्णव, जानकीलाल सुवालका आदि शामिल थे। अतिथियों का स्वागत आयोजन समिति के अध्यक्ष विधायक अशोक कोठारी ने किया। आभार आयोजन समिति के कार्यकारी अध्यक्ष राधेश्याम सोमानी ने जताया। कथा समिति के संयोजक गजानंद बजाज ने बताया कि कथा 14 अप्रेल तक प्रतिदिन दोपहर 2 से शाम 5 बजे तक होगी। कथा पांडाल में श्रद्धालु के लिए सभी जरूरी प्रबंध किए गए है।

जो माता-पिता से छुपकर खाते हैं वह चोर हैं...

कथा में पंडित प्रदीप मिश्रा ने युवाओं को बुर्जुग माता-पिता की सेवा ओर उनकी इच्छाओं का सम्मान करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि बच्चें ओर बुर्जुग एक समान होते है। खाने का जो सामान बच्चों के लिए लाते उसके लिए बुर्जुग माता पिता से भी पूछे उनकी भी इच्छा होती है। जो मां-बाप से छुपाकर खाते है वह चोर होते

है। बाजार में खाते है तो थोड़ा घर पर आपका इन्तजार कर रहे बुर्जुग माता-पिता के लिए भी ले जाए। माता-पिता की दुआएं ही जिंदगी में सफलता का आधार होती है। बच्चों ओर बुढ़ों की सेवा करने वालों को भगवान भी आशीर्वाद देते है।

शिव को जल चढ़ाओ 33 करोड़ देवी देवता को प्राप्त हो जाएगा

कथा में पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा कि केवल दो ही देवता भगवान शिव ओर सूर्यदेव को ही नियमित जल चढ़ता है। बाकी देवी देवताओं का अवसर विशेष होने पर जलाभिषेक किया जाता है। भगवान शिव देवाधिदेव होने से उनको जल चढ़ाने पर सभी 33 करोड़ देवी देवता को प्राप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा कि श्रद्धा के साथ देवाधिदेव महादेव को प्रतिदिन एक लोटा जल चढ़ाने से वास्तुदोष, पितृदोष ओर कालसर्प दोष भी दूर हो जाते है। इन दोषों को दूर करना है तो शिव मंदिर में जल चढ़ाओ ओर भगवान से मन की बात कहे सारे कष्ट दूर हो जाएंगे। मन का विश्वास ओर दृढ़ता भगवान के करीब ले जाती है।

तेरे डमरू की धुन सुनकर मैं काशी नगरिया आई हूं पर झूमे हजारों श्रद्धालु

कथा के दौरान मंच से तेरे डमरू की धुन सुनकर में काशी नगरिया आई, महादेव चरणों

हर दिन बढ़ता जा रहा आस्था से ओतप्रोत श्रद्धालुओं का सैलाब, खचाखच भर गया विशाल पांडाल

में वंदन स्वीकार कीजिए जैसे भजन गाए गए तो हजारों महिला श्रद्धालु अपने-अपने स्थानों पर खड़ा होकर झूमती रही। पांडाल के अंदर हो या बाहर हर तरफ भक्ति से ओतप्रोत श्रद्धालु ऐसे भजनों की रसगंगा में डूबे नजर आए। कथा के दौरान मंच से पंडित मिश्रा ने कुछ श्रद्धालुओं के पत्र पढ़े जिसमें बताया गया था कि उनकी समस्याओं का निदान किस तरह शिव भक्ति से हुआ। ऐसे श्रद्धालुओं को परिवार सहित मंच पर भी बुला पंडित मिश्रा ने अपने हाथों से बिल्व पत्र प्रदान किया। जिन श्रद्धालुओं के पत्र पढ़ उनमें भीलवाड़ा निवासी मंजू पाटोदिया, नेगड़िया निवासी प्रियंका शर्मा, बंबोरी निवासी पप्पू कंवर, बनकोड़ा निवासी सुनीता सोनी, मानपुरा निवासी किरण बारेठ आदि शामिल थे।

कथास्थल पर कीमती आभूषण पहन कर नहीं आए श्रद्धालु

श्री शिव महापुराण कथा आयोजन समिति ने श्रद्धालुओं से आग्रह किया है कि परेशानी से बचने के लिए समय पूर्व अपना स्थान ग्रहण कर ले। कथा स्थल पर पेयजल व जरूरी सुविधाओं का प्रबंध किया गया है। श्रद्धालुओं से पीने के जल की बोतल साथ रखने का आग्रह किया गया है। कथा के दौरान श्रद्धालुओं से सोना चांदी के कीमती आभूषण नहीं पहन कर आने की अपील निरन्तर की जा रही है। श्रद्धालुओं से मोबाइल, पर्स आदि कीमती सामग्री का ध्यान भी रखने का निवेदन किया जा रहा है। कथा सुनने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं के वाहन पार्किंग एवं आगमन निकासी को लेकर विशेष प्रबंध किए गए है।

श्रद्धालुओं की सेवा की लग रही होड़

श्री शिव महापुराण कथा सुनने के लिए भीलवाड़ा ही नहीं मेवाड़ व राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिदिन पहुंच रहे श्रद्धालुओं की सेवा की भी होड़ लगी हुई है। कथा सुनने के लिए पांडाल में रहने वाले हजारों श्रद्धालुओं के लिए चल रही भोजनशाला में अनाज व खाद्य सामग्री पहुंचाने के लिए भी कई श्रद्धालु आगे आ रहे है। मेडिसिटी ग्राउण्ड की तरफ आने वाले सभी मार्गों पर कई सामाजिक व स्वयंसेवी संगठनो ओर परिवारों द्वारा जल सेवा की जा रही है। कई जगह श्रद्धालुओं से चाय की मनुहार भी की जा रही है। कई श्रद्धालु टॉफी व बिस्कुट बांट कर भी श्रद्धालुओं की सेवा कर रहे है।

निलेश कांठेड़
मीडिया प्रभारी: श्री शिव महापुराण कथा आयोजन समिति, भीलवाड़ा

मंत्रों के मंथन से प्राप्त होती हैं अनेक शक्तियां: आर्यिका विज्ञाश्री

11 अप्रैल को जिनसहस्रनाम विधान का आयोजन

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

श्री 1008 नेमिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, रोपा (भीलवाड़ा) में विराजमान आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने जाप्यानुष्ठान के दौरान प्रवचन देते हुए कहा कि मंत्रों के मंथन से ज्ञान, चरित्र और अनंत शक्तियों की प्राप्ति होती है। भागचंद जैन ने बताया कि प्रातः अभिषेक एवं शांतिधारा का आयोजन किया गया। वहीं राजेश बंसल ने जानकारी दी कि आगामी दिवस पर मुनिसुव्रतनाथ भगवान का ज्ञान कल्याणक पर्व मनाया जाएगा। अपने प्रवचन में आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने कहा कि जैसे समुद्र मंथन से अमृत और दधि मंथन से घृत प्राप्त होता है, उसी प्रकार आगम का सार णमोकार मंत्र है। इसके नियमित जाप से आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति संभव है। उन्होंने जाप की विभिन्न विधियों–वाचिक, उपांशु, मानसिक एवं परा–का उल्लेख करते हुए बताया कि मन, वचन और काया से किए गए जाप का अलग-अलग फल मिलता है, जिसमें मन से किया गया जाप सर्वोत्तम होता है। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि 11 अप्रैल 2026 को दोपहर 12:00 बजे से श्री जिनसहस्रनाम महाअर्चना विधान का आयोजन किया जाएगा। श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्म लाभ लेने का आग्रह किया गया है।

भक्ति एवं श्रद्धा के माहौल में बाढ़ बावनपुरा में श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ

बाढ़ बावनपुरा (कोटखावदा)

कोटखावदा तहसील के बाढ़ बावनपुरा गांव में शुक्रवार से श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ श्रद्धा एवं भक्ति के वातावरण में किया गया। कथा का आयोजन आचार्य पंडित मुकेश कुमार के सानिध्य में मुख्य यजमान भगवान सिंह के निवास स्थान पर किया जा रहा है। प्रथम दिवस से ही बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति देखने को मिली। कथा प्रारंभ से पूर्व गांव में भव्य कलश यात्रा निकाली गई, जिसमें महिलाओं ने सिर पर कलश धारण कर मंगल गीतों के साथ सहभागिता निभाई। श्रद्धालुओं ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर यात्रा का स्वागत किया, जिससे पूरा गांव भक्तिमय वातावरण में सराबोर हो गया। प्रथम दिवस की कथा में आचार्य पंडित मुकेश कुमार ने श्रीमद्भागवत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह कथा मानव जीवन को पूर्णता, भक्ति और ज्ञान की दिशा में अग्रसर करती है। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि भगवान सदा एक समान और अटल रहते हैं, जैसे सोना अपने स्वरूप में स्थिर रहता है। उन्होंने बताया कि भागवत कथा का श्रवण करने से व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आता है तथा उसे मानसिक और आध्यात्मिक शांति प्राप्त होती है। कथा में सुगन सिंह नरुका, श्याम सिंह राठौड़, मदन सिंह राठौड़, चंद्र सिंह राठौड़, सिकंदर सिंह, सुमेर सिंह सहित अनेक ग्रामीण श्रद्धालु उपस्थित रहे और भक्ति भाव से कथा का रसपान किया। आयोजन समिति के अनुसार यह कथा 16 अप्रैल 2026 तक निरंतर चलेगी, जिसमें प्रतिदिन विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से भगवान की लीलाओं का वर्णन किया जाएगा। गांव में इस धार्मिक आयोजन को लेकर उत्साह और श्रद्धा का वातावरण बना हुआ है।

जवाहर कला केंद्र के 33वें स्थापना दिवस समापन पर कलाकारों ने बांधा समां

जयपुर. शाबाश इंडिया। जयपुर स्थित जवाहर कला केंद्र के 33वें स्थापना दिवस के समापन समारोह पर जेयान हुसैन ने अपने साथी कलाकारों के साथ वाद्य वादन की सुरीली प्रस्तुति देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में गुलजार वायलिन अकादमी के युवा कलाकार–सुजान हुसैन, राहुल कुमावत, लक्ष्यता भट्ट, मानव गर्ग, लहरी कल्लम, अंकित ठठेरा, तपस्या डांगी और रिभव गुप्ता–ने वायलिन वादन प्रस्तुत किया। उनके साथ तन्मय जोशी (बांसुरी) और जेयान हुसैन (तबला) ने संगत दी। कलाकारों ने राग खमाज में दीपचंदी ताल पर आधारित एक बंदिश प्रस्तुत की, जिसके बाद मध्य लय तीनताल में ''ना मानूंगी'' बंदिश सुनाई। अंत में द्रुत लय में झालों के साथ प्रस्तुति का प्रभावशाली समापन किया गया। द्वितीय चरण में किशनगढ़ की उर्मिला कुमारी के निर्देशन में ''भवाई'' नृत्य की आकर्षक प्रस्तुति दी गई। इसके पश्चात चूरू से आए किशनलाल एंड पार्टी ने भगवान शिव एवं गोगाजी महाराज की आराधना में डेरू नृत्य प्रस्तुत कर कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। पूरे कार्यक्रम के दौरान दर्शक कलाकारों की प्रस्तुतियों से भावविभोर होकर तालियों की गूंज से उत्साह व्यक्त करते रहे।

वनतारा ने वाइल्डलाइफ और वेटेरिनरी साइंस के लिए दुनिया की पहली ग्लोबल यूनिवर्सिटी लॉन्च की

आधुनिक गुरुकुल और उद्देश्य-आधारित विश्वविद्यालय के रूप में कल्पित इस यूनिवर्सिटी का मकसद भारत को वाइल्डलाइफ और वेटेरिनरी एजुकेशन के लिए एक ग्लोबल हब बनाना है।

जामनगर. शाबाश इंडिया

रिलायंस इंडस्ट्रीज के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अनंत अंबानी की बनाई ग्लोबल वाइल्डलाइफ कंजर्वेशन ऑर्गनाइजेशन, वनतारा ने जामनगर, गुजरात में वनतारा यूनिवर्सिटी शुरू करने की घोषणा की है। यह वन्यजीव संरक्षण और पशु चिकित्सा विज्ञान को समर्पित दुनिया की पहली एकीकृत वैश्विक यूनिवर्सिटी होगी। वनतारा यूनिवर्सिटी की नींव पशु कल्याण, वैज्ञानिक प्रगति और वन्यजीव संरक्षण पर आधारित है। इस संस्थान का लक्ष्य पशु चिकित्सा, संरक्षण और वन्यजीव देखभाल के क्षेत्र में भविष्य के लीडर्स तैयार करना है। इसका पाठ्यक्रम भारत की सदियों पुरानी ज्ञान परंपराओं का उपयोग करके शिक्षा का एक उद्देश्य-पूर्ण और भविष्य-उन्मुखी मॉडल तैयार करेगा। अनंत अंबानी ने कहा, संरक्षण का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि हम लोगों और संस्थानों को करुणा, ज्ञान और कौशल के साथ जीवों की सेवा करने के लिए कैसे तैयार करते हैं। वनतारा यूनिवर्सिटी की परिकल्पना उस व्यक्तिगत अनुभव से प्रेरित है, जब मैंने संकट में पड़े पशुओं को करीब से देखा और उनकी बेहतर देखभाल के लिए अधिक क्षमता की आवश्यकता महसूस की। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की भावना और ह्यआ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः अर्थात सभी दिशाओं से श्रेष्ठ विचार हमारे पास आएं, के आदर्शों से प्रेरित होकर यह विश्वविद्यालय हर जीवन की रक्षा के लिए समर्पित नई पीढ़ी तैयार करना चाहता है।

इस विचार को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाने के लिए आधारशिला स्थल के डिजाइन में दो बिजोलिया बलुआ पत्थरों को शामिल किया गया। ये पत्थर प्राचीन विंध्यन भू-विन्यास से लिए गए हैं, जो वर्तमान बिहार में स्थित प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की भौगोलिक संरचना से जुड़े माने जाते हैं। ये भारत की ज्ञान और शिक्षा की सतत परंपरा का प्रतीक हैं।

हिंदू परंपराओं के अनुसार आयोजित इस शिलान्यास समारोह में शिक्षा, विज्ञान, संरक्षण और सार्वजनिक जीवन के प्रतिनिधियों के साथ-साथ अनंत अंबानी के शिक्षक और मार्गदर्शक भी शामिल हुए। समारोह का एक मुख्य आकर्षण मिट्टी, जल और पत्थरों को विधि-विधान से स्थापित करने की रस्म थी, जिसे शिलान्यास के एक प्रतीकात्मक कार्य के रूप में संपन्न किया गया। ये तत्व पूरे भारत के जैव-विविधता से समृद्ध विभिन्न भू-भागों से एकत्रित किए गए थे। जिनमें घास के मैदान, वन, आर्द्रभूमि, शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र, तथा हिमालयी और देश के उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी और मध्य भागों में स्थित अन्य ऊँचाई वाले स्थान शामिल हैं। ये तत्व भारत की प्राकृतिक विविधता और विरासत को दर्शाते हैं। वनतारा यूनिवर्सिटी एक ही शैक्षणिक ढांचे के भीतर विभिन्न विषयों को जोड़ेगी, जिसकी नींव वास्तविक संरक्षण कार्यों के अनुभव पर आधारित होगी। वनतारा के जमीनी अनुभवों को अकादमिक कार्यक्रमों, पेशेवर प्रशिक्षण और वैश्विक स्तर पर उपयोगी शिक्षा ढांचे में बदला जाएगा। करुणा, विज्ञान और संरक्षण के समन्वय के माध्यम से यह संस्थान ऐसे पेशेवर तैयार करेगा जो वन्यजीव और पारिस्थितिकी से जुड़ी जटिल चुनौतियों का समाधान कर सकें। यूनिवर्सिटी अलग-अलग सब्जेक्ट्स में अंडरग्रेजुएट, पोस्टग्रेजुएट, फेलोशिप और स्पेशलाइज्ड प्रोग्राम ऑफर करेगी। इनमें वाइल्डलाइफ मेडिसिन और सर्जरी, न्यूट्रिशन, बिहेवियरल साइंसेज, जेनेटिक्स, एपिडेमियोलॉजी, वन हेल्थ, कंजर्वेशन पॉलिसी और नेचुरलिस्टिक एनिमल केयर एनवायरनमेंट डिजाइन शामिल हैं। वनतारा की कार्यक्षमता के अनुरूप विशेष कॉलेज भी स्थापित किए जाएंगे। साथ ही सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्तियां भी प्रदान की जाएंगी।

तृतीय पट्टाचार्य धर्म शिरोमणि आचार्य श्री 108 धर्मसागर जी महाराज को विनयांजलि

''श्रीशांतिवीरशिवधमार्जीतवर्धमान सुरिभ्यो नम:''

चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण पट्ट परंपरा के तृतीय पट्टाचार्य धर्म शिरोमणि आचार्य श्री 108 धर्मसागर जी महाराज के 39वें अंतर्विलय वर्ष (समाधि दिवस) पर कोटि-कोटि नमन एवं भावभीनी विनयांजलि।

संक्षिप्त जीवन परिचय

पूर्वाश्रम का नामः श्री चिरंजीलाल जी
पिता/माताः श्री बख्तावरमल जी एवं श्रीमती उमराव देवी
जन्मः 12 जनवरी 1914 (पौष शुक्ल पूर्णिमा, संवत 1970)
जन्म स्थानः गंभीरा, राजस्थान
विशेष संयोगः आपका जन्म धर्मनाथ भगवान के केवलज्ञान कल्याणक के शुभ दिन हुआ।

तप एवं संयम का मार्ग (दीक्षा विवरण)

क्षुल्लक दीक्षाः संवत 2000, चैत्र कृष्ण सप्तमी को बालूज (महाराष्ट्र) में आचार्य कल्प श्री चंद्रसागर जी महाराज से। (नामः क्षुल्लक श्री 105 भद्रसागर जी)
ऐलक दीक्षाः संवत 2007, वैशाख माह में फुलेरा (राजस्थान) में आचार्य श्री 108 वीरसागर जी महाराज से।
मुनि दीक्षाः संवत 2008, कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को फुलेरा में आचार्य श्री 108 वीरसागर जी महाराज द्वारा। (नामः मुनि श्री 108 धर्मसागर जी)

आचार्य पद एवं शिष्य परंपरा

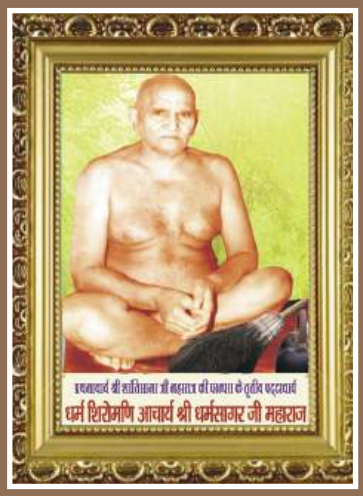

24 फरवरी 1969 (फाल्गुन शुक्ल अष्टमी) को श्री महावीर जी (राजस्थान) में आपको तृतीय पट्टाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इसी ऐतिहासिक दिन आपके कर-कमलों से वर्तमान वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज सहित 11 दीक्षाएँ संपन्न हुईं।
कुल दीक्षाएँ (76): मुनि-33, आर्यिका-21, ऐलक-1, क्षुल्लक-17, क्षुल्लिका-5।
चातुर्मासः क्षुल्लक, मुनि एवं आचार्य अवस्था में आपने कुल 43 चातुर्मास पूर्ण किए।

अंतर्विलय समाधि

आपका जीवन और समाधि दोनों तीर्थंकरों के कल्याणक से जुड़े रहे। आपकी समाधि वैशाख कृष्ण नवमी, संवत 2044 (सन 1987) को सीकर (राजस्थान) में हुई। संयोगवश यह दिन श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के केवलज्ञान कल्याणक का था।
नमोस्तु शासन नायक, नमोस्तु धर्म दिवाकर।
विनयांजलि प्रेषकः
आर्यिका श्री महायशमती जी (संघस्थ आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज)
संकलनः राजेश पंचोलिया, इंदौर (9926065065)
वात्सल्य वारिधि भक्त परिवार